प्रयोजनमूलक हिंदी में राजभाषा, संचारी भाषा और मातृभाषा का स्वरूप और भूमिका

रम्या बी.के.

नेशनल कॉलेज, जयनगर, बेंगलुरु.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18775859

ABSTRACT:

प्रयोजनमूलक हिंदी (Functional Hindi) के संदर्भ में राजभाषा, संचार भाषा और मातृभाषा का स्वरूप और उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रयोजनमूलक हिंदी वह हिंदी है जिसका प्रयोग हम किसी विशेष उद्देश्य या काम (जैसे- प्रशासन, विज्ञान, तकनीक, विधि आदि) के लिए करते हैं।

KEYWORDS:

प्रयोजनमूलक हिंदी, राजभाषा, संचारी भाषा, मातृभाषा, प्रशासनिक शब्दावली.

१. मातृभाषा

मातृभाषा वह भाषा है जिसे बालक अपने घर-परिवार और परिवेश से सबसे पहले सीखता है। यह सहज और स्वाभाविक होती है।

स्वरूप: यह अनौपचारिक होती है। इसमें व्याकरण के कड़े नियम लागू नहीं होते और इसमें स्थानीय बोलियों का पुट होता है।

भूमिका: यह व्यक्ति के भावनात्मक विकास का आधार है। प्रयोजनमूलक हिंदी के संदर्भ में, मातृभाषा ही वह नींव है जिस पर अन्य भाषाई कौशल विकसित किए जाते हैं। नई शिक्षा नीति में भी प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने पर जोर दिया गया है ताकि विषय की समझ बेहतर हो सके।

२. राजभाषा

राजभाषा वह भाषा है जिसका प्रयोग सरकारी कामकाज, प्रशासन, संसद और न्यायपालिका में किया जाता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३४३ के अनुसार, देवनागरी लिपि में हिंदी भारत की राजभाषा है।

स्वरूप: इसका स्वरूप औपचारिक, पारिभाषिक और मानक

होता है। इसमें 'पारिभाषिक शब्दावली' (Technical Terminology) का प्रयोग अनिवार्य है ताकि अर्थ में कोई संशय न रहे।

भूमिका: प्रशासनिक कार्यों में एकरूपता लाना। सरकार और जनता के बीच संपर्क सूत्र का कार्य करना। संविधान, नियम, अधिनियम और कार्यालयी ज्ञापनों (Memorandums) का प्रारूप तैयार करना।

३. संचार भाषा

संचार भाषा (या संपर्क भाषा) वह भाषा है जो विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों के बीच आपसी संवाद का माध्यम बनती है। इसे 'माध्यम भाषा' भी कहा जा सकता है।

स्वरूप: इसका स्वरूप लचीला और व्यावहारिक होता है। इसमें बोलचाल के शब्दों, अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों और अन्य क्षेत्रीय शब्दों का समावेश होता है ताकि संदेश स्पष्ट रूप से संप्रेषित हो सके।

भूमिका:

- बाजार और व्यापार: उपभोक्ता और विक्रेता के बीच संवाद।
- मीडिया और विज्ञापन: जनमानस तक सूचनाएं पहुँचाना।
- सांस्कृतिक एकता: उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम के लोगों को जोड़ने का कार्य करना।

संक्षेप में: राजभाषा अनुशासन सिखाती है, संचार भाषा गतिशीलता (Mobility) प्रदान करती है, और मातृभाषा जड़ें (Roots) प्रदान करती है।

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि वह समाज के विकास, शासन व्यवस्था और मानवीय संवेदनाओं का आधार होती है। आधुनिक युग में हिंदी केवल साहित्य की भाषा न रहकर प्रशासन, तकनीक, संचार और जन-जन के जुड़ाव की भाषा बन गई है।

हिंदी का जन्म १००० ई. के लगभग हुआ था। उस समय यह केवल बोलचाल की भाषा थी। सामान्य जीवन तथा उससे संबद्ध खेती, व्यापार, लुहारी, बढ़ई, कुम्हारी आदि जीवन के तत्कालीन आवश्यक क्षेत्र में इसका प्रयोग होता था और इनसे संबद्ध उसके थोड़े-बहुत विशेषीकृत रूप थे। हिंदी के भौगोलिक परिवर्तन अत्यधिक थे, क्योंकि उनका क्षेत्र काफी विस्तृत था। धीरे-धीरे हिंदी भाषी लोग जैसे-जैसे धर्म, साहित्य आदि अन्य विशिष्ट क्षेत्रों में अपनी भाषा का प्रयोग करते गए, इसके

प्रयोजनमूलक नए रूप भी विकसित होते गए। मध्यकाल में प्रशासनिक, कला-कारीगरी, वस्त्र उद्योग आदि कई दृष्टियों से हिंदी भाषा की नई विशेषताएं बढ़ीं, अतः हिंदी के प्रयोजनमूलक नए रूप प्रकाश में आए। अंग्रेजी शासन में यूरोपीय संपर्क से हमारा सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक ढांचा अत्यधिक परिवर्तित हुआ। धीरे-धीरे हमारे जीवन में नई विशेषताएं यथा- पत्रकारिता, इंजीनियरिंग, बैंकिंग आदि उपजीं और तदनुकूल हिंदी के नए प्रयोजनमूलक भाषिक रूप भी उभरे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हिंदी भाषा के क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि हुई जो आज तक जारी है। इसी कारण हिंदी भाषा का सामान्य भाषा से अलग होकर प्रशासनिक हिंदी या प्रयोजनमूलक हिंदी का ढांचा लेना आवश्यक हो गया है। आज के संदर्भ में एक राष्ट्र-एक राष्ट्रभाषा होने के नाते प्रशासनिक हिंदी यानी प्रयोजनमूलक हिंदी की भूमिका ज्यादा है।

प्रयोजनमूलक हिंदी और साहित्यिक हिंदी में अंतर तो बहुत है। साहित्यिक हिंदी मातृभाषा बनकर भी हिंदी बोलने वाले प्रांतों में अपनी भूमिका निभाती है। मगर प्रयोजनमूलक हिंदी, अहिंदी प्रांतों में भी प्रशासनिक क्षेत्र, पत्रिका और व्यावहारिक आदि क्षेत्रों में अपनी भूमिका निभाती है। साहित्यिक भाषा का स्वरूप मातृभाषा के स्वरूप में जुड़ सकता है मगर साहित्यिक भाषा प्रयोजनमूलक हिंदी के स्वरूप में या भूमिका में जुड़ नहीं सकती।

इन दोनों में मूलभूत अंतर होता है:

साहित्यिक हिंदी: यह हृदय को छूने वाली होती है। इसमें कल्पना, रस और अलंकारों का प्रयोग होता है (जैसे: "शाम बहुत सुंदर है")।

प्रयोजनमूलक हिंदी: यह मस्तिष्क और कार्य से जुड़ी होती है। यह सूचना प्रधान और औपचारिक होती है (जैसे: "कार्यालय समय समाप्त होने की सूचना दी जाती है")।

प्रयोजनमूलक हिंदी (Functional Hindi) का अर्थ:

बहुत ही सरल है: वह हिंदी जिसका प्रयोग किसी विशेष उद्देश्य (प्रयोजन) या कार्य के लिए किया जाता है।

- श्री मोटूरी सत्यनारायण ने कहा है - "जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जाने वाली हिंदी ही प्रयोजनमूलक हिंदी है।"

साधारण बोलचाल की हिंदी और साहित्यिक हिंदी (कविताओं-

कहानियों वाली) से अलग, यह वह हिंदी है जो कार्यालयों, विज्ञान, तकनीक, विधि (कानून) और व्यापार में इस्तेमाल होती है। प्रयोजनमूलक हिंदी को व्यावहारिक हिंदी, प्रयोजनी हिंदी, कामकाजी हिंदी, प्रयोजनपरक हिंदी, आदि विविध विशेषणों से कहा गया है।

शाब्दिक अर्थ

- प्रयोजन: इसका अर्थ है 'उद्देश्य' (Purpose) या 'सेवा'।
- मूलक: इसका अर्थ है 'आधारित' (Based on)।

अतः, वह भाषा जो किसी खास कार्य-सिद्धि या उद्देश्य के आधार पर टिकी हो, उसे प्रयोजनमूलक हिंदी कहते हैं। इसे अंग्रेजी में 'Functional Hindi' कहा जाता है।

मुख्य उद्देश्य

प्रयोजनमूलक हिंदी का मुख्य उद्देश्य सूचनाओं का आदान-प्रदान और विशिष्ट कार्य संपन्न करना है। इसके कुछ प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं-

अभिव्यक्ति की स्पष्टता: इसमें शब्दों के एक ही अर्थ होते हैं (अनेकार्थी शब्दों से बचा जाता है) ताकि काम में कोई भ्रम न हो।

पारिभाषिक शब्दावली: इसमें विशेष तकनीकी शब्दों का प्रयोग होता है, जैसे: अनुबंध (Contract), संस्तुति (Recommendation), अधिसूचना (Notification)।

तटस्थता: इसमें लेखक की अपनी भावनाएँ या अलंकार (जैसे मुहावरे या कविता) नहीं होते। यह सीधी और गंभीर होती है। सभी प्रांत के सभी क्षेत्र में एक ही शब्द हम प्रयोग कर सकते हैं, यह तो प्रशासन में या कोई सरकारी कामकाज में सभी क्षेत्र में उपयोगी होगी।

इन उद्देश्यों के साथ और एक प्रमुख उद्देश्य है कि अहिंदी प्रांतों में इसे संस्कृति तथा साहित्य के प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि व्यवहार तथा प्रयोजन के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। प्रयोजनमूलक हिंदी को अहिंदी भाषी लोग सरल और सुलभता से प्रयोग कर सकते हैं। तब पूरे राष्ट्र में एक भाषा यानी हिंदी को राजभाषा या राष्ट्रभाषा घोषित करने में भी कोई समस्या नहीं होगी।

प्रयोजनमूलक हिंदी के विभिन्न रूप (क्षेत्र)

प्रयोजनमूलक हिंदी केवल एक प्रकार की नहीं होती, यह कार्यक्षेत्र के अनुसार बदल जाती है:

- प्रशासनिक - सरकारी दफ्तरों की चिट्ठी-पत्री, नियम और आदेश।
- वाणिज्यिक - बैंकिंग, शेयर बाजार, बीमा और व्यापारिक लेन-देन।
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी - विज्ञान, इंजीनियरिंग और आयुर्विज्ञान की शब्दावली।
- विधि (Law) - न्यायालयों के फैसले, कानून की धाराएं और वकालत।
- जनसंचार - समाचार पत्र, रेडियो, टीवी और विज्ञापन की भाषा।
- सामाजिक हिंदी - सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा व्यवहृत होने वाली हिंदी।
- साहित्यिक हिंदी - कविता, कला और साहित्य की विभिन्न विधाओं की भाषा।
- जनसंचार माध्यम - पत्रकारिता, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन आदि की भाषा।

साहित्यिक हिंदी और प्रयोजनमूलक हिंदी में अंतर

राजभाषा (Official Language) का सरल अर्थ है- "राज-काज की भाषा"। वह भाषा जिसका प्रयोग किसी देश के राजकीय प्रशासन, शासन, और संविधान द्वारा स्वीकृत कार्यों के लिए किया जाता है, उसे राजभाषा कहते हैं।

राजभाषा का अर्थ

'राजभाषा' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है: राज + भाषा।

- इसका तात्पर्य उस भाषा से है जिसे सरकारी कामकाज (जैसे- प्रशासनिक पत्राचार, संसद की कार्यवाही, कानून निर्माण, और अदालती कामकाज) के लिए कानूनी मान्यता प्राप्त हो।
- यह जनता और सरकार के बीच संवाद का मुख्य सेतु होती है।

संविधानिक प्रावधान

भारतीय संविधान में राजभाषा को लेकर स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए गए हैं:

- अनुच्छेद ३४३(१): इसके अनुसार "संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।"
- अनुच्छेद ३४४: राजभाषा के संबंध में आयोग और संसद की समिति के गठन का प्रावधान है।
- अनुच्छेद ३५१: हिंदी भाषा के विकास और प्रचार-प्रसार के लिए सरकार को निर्देश दिए गए हैं।

राजभाषा की मुख्य विशेषताएँ

राजभाषा की प्रकृति सामान्य बोलचाल की भाषा से भिन्न होती है:

- औपचारिकता: राजभाषा में शब्दों का प्रयोग बहुत नपा-तुला और औपचारिक होता है।
- निश्चित अर्थ: इसमें तकनीकी और पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है जिनका एक ही निश्चित अर्थ निकलता है ताकि सरकारी आदेशों में कोई भ्रम न रहे।

राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर

अक्सर लोग इन दोनों को एक ही समझ लेते हैं, लेकिन इनमें तकनीकी अंतर है:

राजभाषा

- प्रशासन और सरकार के कामकाज की भाषा।
- इसे संविधानिक और कानूनी दर्जा प्राप्त होता है।
- इसका कार्यक्षेत्र सरकारी कार्यालय, संसद और न्यायालय में होता है।

राष्ट्रभाषा

- पूरे राष्ट्र के सांस्कृतिक और सामाजिक संपर्क की भाषा।
- यह भावनात्मक और जन-स्वीकृति पर आधारित होती है।
- देश के जन-मानस की अभिव्यक्ति।

राजभाषा के रूप में हिंदी का महत्व

हिंदी को राजभाषा बनाने का मुख्य कारण यह था कि यह भारत

के एक बड़े भू-भाग में बोली और समझी जाती है। यह भारतीय संस्कृति को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। राजभाषा और प्रयोजनमूलक हिंदी में बहुत अंतर नहीं पा सकते हैं। प्रयोजनमूलक हिंदी में प्रशासनिक शब्दावली जो आती है वह राजभाषा में प्रयोग करते हैं। राजभाषा होने के नाते व्यावहारिक, प्रशासनिक या बैंकिंग कार्यों में राजभाषा के जरिए हम प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोग करते हैं। यह तो हम प्रयोजनमूलक हिंदी के कार्य क्षेत्र में ऊपर की पंक्तियों में समझ चुके हैं।

हमारे देश में राजभाषा हिंदी है मगर अंग्रेजी को Associate official language 'सहायक राजभाषा' के रूप में प्रयोग किया जाता है।

संचारी भाषा हिंदी की भूमिका और स्वरूप

संचार का अर्थ है विचारों और सूचनाओं का आदान-प्रदान। जब कोई भाषा व्यापक स्तर पर लोगों को आपस में जोड़ने का कार्य करती है, तब वह संचारी भाषा कहलाती है। हिंदी भारत की प्रमुख संचारी भाषा है। देश के विभिन्न राज्यों, भाषाओं और संस्कृतियों के लोग आपस में संवाद करने के लिए हिंदी का प्रयोग करते हैं।

रेलवे स्टेशन, बस अड्डे, बाजार, कार्यालय, मीडिया और जनसंपर्क के क्षेत्रों में हिंदी का व्यापक उपयोग होता है। सिनेमा, टेलीविजन, समाचार पत्र और सोशल मीडिया ने हिंदी को जनसंचार की सबसे प्रभावशाली भाषा बना दिया है। हिंदी की सरलता, लचीलापन और आत्मसात करने की क्षमता इसे एक सशक्त संचारी भाषा बनाती है।

संचार माध्यम का व्यापक प्रभाव आज विश्व में एक नए वातावरण और संस्कृति का सृजन कर रहा है। संचार के समस्त साधन एक नया समाज और नई सभ्यता की रचना के लिए होते हैं। वर्तमान इलेक्ट्रॉनिक युग में भाषा किस प्रकार संचार माध्यमों को गति और प्रभाव दे रही है, यह एक विलक्षण बात है।

संचारी भाषा के रूप में हिंदी का स्वरूप सरल, लचीला और सर्वग्राही है। यह विभिन्न भाषाओं और बोलियों के शब्दों को आत्मसात करने की क्षमता रखती है। रेलवे स्टेशन, बस अड्डे, बाजार, कार्यालय, मीडिया, शिक्षा संस्थान और सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है।

प्रयोजनमूलक हिंदी में संचारी भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। जनसंचार माध्यमों जैसे समाचार पत्र, टेलीविजन, रेडियो, सोशल मीडिया और विज्ञापन में प्रयुक्त हिंदी मूलतः प्रयोजनमूलक होती है। इसका उद्देश्य सूचना को कम समय में अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना होता है। इसलिए संचारी हिंदी सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली होती है।

मातृभाषा हिंदी की भूमिका और स्वरूप

मातृभाषा वह भाषा होती है जिसे व्यक्ति जन्म के बाद सबसे पहले सीखता है। यह भाषा परिवार और समाज से स्वाभाविक रूप से प्राप्त होती है। हिंदी भारत में करोड़ों लोगों की मातृभाषा है। मातृभाषा के रूप में हिंदी व्यक्ति के मानसिक, बौद्धिक और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मातृभाषा प्रयोजनमूलक हिंदी की आधारशिला है। व्यक्ति जिस भाषा में सोचता और समझता है, उसी भाषा में वह कार्य को अधिक प्रभावी ढंग से कर सकता है। यदि हिंदी मातृभाषा है, तो प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोग सहज और प्रभावी हो जाता है। मातृभाषा से प्राप्त शब्द-भंडार और व्याकरणिक ज्ञान प्रयोजनमूलक हिंदी को सशक्त बनाता है। प्रयोजनमूलक हिंदी की नींव मातृभाषा पर ही टिकी होती है। यदि हिंदी मातृभाषा है, तो कार्यालयी कार्य, प्रशासनिक लेखन और तकनीकी संप्रेषण अधिक सरल और प्रभावी हो जाता है।

प्रयोजनमूलक हिंदी में मातृभाषा, संचारी भाषा और राजभाषा का समन्वय

प्रयोजनमूलक हिंदी में मातृभाषा, संचारी भाषा और राजभाषा का गहरा और पूरक संबंध है। मातृभाषा व्यक्ति को भाषा की मूल संरचना प्रदान करती है, संचारी भाषा समाज में संपर्क और संवाद स्थापित करती है, और राजभाषा प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाती है। इन तीनों का समन्वय प्रयोजनमूलक हिंदी को प्रभावी और उपयोगी बनाता है।

जब मातृभाषा के रूप में हिंदी मजबूत होती है, तब व्यक्ति प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोग आत्मविश्वास के साथ कर पाता है। संचारी हिंदी इसे व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाती है, जबकि राजभाषा के रूप में इसका प्रयोग इसे अधिकारिक और मान्य बनाता है।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ

प्रयोजनमूलक हिंदी के सामने अंग्रेज़ी के बढ़ते प्रभाव, तकनीकी शब्दावली की कमी और मानसिकता से जुड़ी चुनौतियाँ हैं। फिर भी इसकी संभावनाएँ अपार हैं। यदि शिक्षा, प्रशासन और तकनीक में हिंदी को प्राथमिकता दी जाए, तो यह और अधिक प्रभावशाली बन सकती है। मातृभाषा के सम्मान, संचारी शक्ति और राजभाषा के विस्तार से प्रयोजनमूलक हिंदी का विकास संभव है।

मातृभूमि और मातृभाषा से मनुष्य भावनात्मक रूप से जुड़े रहते हैं। उस भाषा में बदलाव लाना उनके लिए मुश्किल है। राजभाषा के जरिए हिंदी को मानेंगे मगर प्रांतीय भाषा और मातृभाषा को छोड़कर कोई अलग भाषा को अपनाना उनके लिए कष्टदायक है।

उपसंहार

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रयोजनमूलक हिंदी आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली भाषा है। मातृभाषा के रूप में यह व्यक्ति को संस्कार और सोच प्रदान करती है, संचारी भाषा के रूप में समाज को जोड़ती है और राजभाषा के रूप में प्रशासन को जनोन्मुख बनाती है। इन तीनों की संयुक्त भूमिका और स्वरूप ही प्रयोजनमूलक हिंदी को पूर्ण और प्रभावी बनाते हैं। हिंदी का यह बहुआयामी स्वरूप न केवल भाषा की शक्ति को दर्शाता है, बल्कि राष्ट्रीय एकता और विकास का मार्ग भी प्रशस्त करता है। प्रयोजनमूलक हिंदी आधुनिक युग की मांग है। यह हिंदी को केवल "बोलियों" या "कविताओं" की भाषा से ऊपर उठाकर एक 'कामकाजी भाषा' और 'विश्व भाषा' के रूप में स्थापित करती है।

संदर्भ:

1. प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका - कैलाश नाथ पांडे
2. भाषा विज्ञान - भोलेनाथ तिवारी
3. कंप्यूटर और हिंदी - प्रो. हरिमोहन